

प्रेषक,

डा० रणबीर सिंह,
प्रमुख सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

निदेशक,
मत्स्य विभाग,
उत्तराखण्ड, देहरादून।

पशुपालन अनुभाग-02

देहरादून: दिनांक 28 जनवरी, 2015:

विषय- वित्तीय वर्ष 2014-15 में मत्स्य विभाग को 80 प्रतिशत केन्द्र पुरोनिधानित मत्स्य पालन, प्रशिक्षण एवं प्रसार योजना हेतु वित्तीय स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके पत्र संख्या-1207/म0प्र0 एवं प्रसार/2014-15, दिनांक 07 जनवरी, 2015 के संदर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि भारत सरकार, कृषि मंत्रालय, पशुपालन, डेरी एवं मत्स्य विभाग के पत्र संख्या-12012/26/2009-Fy(WU), दिनांक 31 दिसम्बर, 2014 द्वारा 80 प्रतिशत केन्द्रपुरोनिधानित मत्स्य प्रशिक्षण एवं प्रसार योजना के अन्तर्गत एवेयरनेस सैन्टर के निर्माण हेतु वित्तीय वर्ष 2014-15 में अवमुक्त केन्द्रांश रु० 12.00 लाख की वित्तीय स्वीकृति प्रदान करने के फलस्वरूप राज्यांश रु० 3.00 लाख अर्थात् कुल धनराशि रु० 15.00 लाख (रुपये पन्द्रह लाख मात्र) निम्नलिखित शर्तों एवं प्रतिबन्धों के अधीन आपके निर्वर्तन पर रखते हुए इसे आहरण कर व्यय किये जाने की श्री राज्यपाल महोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

1. इस संबंध में स्पष्ट किया जाता है कि अतिरिक्त अनुदान की प्रत्याशा में अनाधिकृत रूप से व्यय न किया जाय। धनराशि का व्यय करते समय वित्तीय हस्त पुस्तिका में उल्लिखित नियमों एवं क्रय संबंधी शासनादेशों का पालन किया जायेगा। धनराशि का व्यय एवं आहरण आवश्यकतानुसार ही किया जायेगा।
2. स्वीकृत धनराशि का उपयोग शासन द्वारा समय-समय पर जारी किये गये मितव्ययता संबंधी आदेशों व वित्तीय हस्त पुस्तिका में दिये गये प्राविधानों के अन्तर्गत किया जायेगा।
3. धनराशि को व्यय किये जाने से पूर्व जहाँ कहीं आवश्यक हो समक्ष अधिकारी की स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर ली जाए।
4. सभी कार्यक्रमों का जनपदवार वार्षिक/मासिक लक्ष्यों का निर्धारण भी आपके द्वारा तत्काल कर दिया जाय, ताकि फील्ड स्तर पर भी निर्धारित किये गये लक्ष्यों की सूचना उपलब्ध करा दी जाय।
5. स्वीकृत धनराशि का उपयोग सर्वप्रथम 75 प्रतिशत से अधिक पूर्ण योजनाओं के लिए किया जाय।
6. उक्त स्वीकृति इस शर्त के अधीन है कि उक्त धनराशि केवल चालू एवं पूर्व अनुमोदित कार्यों-मदों पर ही व्यय किया जाय तथा किसी ऐसे कार्यों/मदों पर धनराशि व्यय न की जाय, जो योजना में स्वीकृत नहीं है।

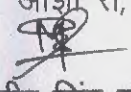
7. अवमुक्त की जा रही धनराशि का उन्हीं मदों पर व्यय किया जायेगा जिस हेतु धनराशि अवमुक्त की जा रही है, यदि इसका उपयोग अन्यत्र किसी अन्य मद में किया जाता है तो सम्बन्धित अधिकारी इसके लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे तथा अप्राधिकृत व्यय की वसूली की जायेगी।
 8. अवमुक्त की जा रही धनराशि का व्यय चालू वित्तीय वर्ष में भारत सरकार द्वारा निर्धारित नार्मस के अनुसार किया जाय तथा उपयोग कर उपयोगिता प्रमाण पत्र दिनांक 31-03-2015 तक शासन/भारत सरकार को उपलब्ध कराया जाय।
- 2- उक्त पर होने वाला व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2014-15 में अनुदान संख्या-28 के अन्तर्गत लेखाशीर्षक-4405-मछली पालन पर पूंजीगत परिव्यय-101-अन्तर्देशीय मछली पालन-01-केन्द्रीय आयोजनागत/केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजनाएं-0101-मत्स्य प्रशिक्षण एवं प्रसार योजना (80% केन्द्रपोषित)-24-वृहत निर्माण कार्य के नामे डाला जायेगा।
- 3- यह आदेश वित्त विभाग के शासनादेश संख्या-318/XXVII(1)/2014, दिनांक 18 मार्च, 2014 द्वारा दिये गये निर्देशों के क्रम में निर्गत किये जा रहे हैं।

भवदीय,
/ (डा० रणबीर सिंह)
प्रमुख सचिव।

संख्या-38 (1)/XV-2/2015 तददिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. महालेखाकार, ओबराय मोटर्स बिल्डिंग, सहारनपुर रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड।
2. मण्डलायुक्त, कुमाऊँ/गढ़वाल, उत्तराखण्ड।
3. वरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।
4. निजी सचिव, मा० मंत्री, मत्स्य को मा० मंत्री जी के संज्ञानार्थ प्रस्तुत करने हेतु प्रेषित।
5. वित्त अनुभाग-4, /नियोजन विभाग, उत्तराखण्ड शासन।
- ✓ 6. निदेशक, एन०आई०सी०, सचिवालय परिसर, देहरादून।
7. निदेशक, बजट राजकोषीय नियोजन एवं संसाधन निदेशालय, सचिवालय परिसर, देहरादून।
8. गार्ड फाइल।

आज्ञा से,

(महावीर सिंह चौहान)
उप सचिव।